

जीवन विद्या शिविर

(जीने का विवेक और विज्ञान)

अभ्युदय संस्थान, अछोटी
जिला दुर्ग (छ.ग.)

प्रस्तुति क्रम

- ◆ परिचय: यह शिविर क्या, क्यों और कैसे
- ◆ प्रस्तुति का संदर्भ
 - ◆ मानव के मूल प्रश्न
 - ◆ वर्तमान जीने की समीक्षा
- ◆ मूल विषय वस्तु
 - ◆ मानव में व्यवस्था
 - ◆ परिवार में व्यवस्था
 - ◆ समाज में व्यवस्था
 - ◆ प्रकृति एवं अस्तित्व में व्यवस्था
- ◆ समापन

प्रस्तुति क्रम में हम यहाँ हैं

◆ परिचय: यह शिविर क्या, क्यों और कैसे

◆ प्रस्तुति का संदर्भ

- ◆ मानव के मूल प्रश्न
- ◆ वर्तमान जीने की समीक्षा

◆ मूल विषय वस्तु

- ◆ मानव में व्यवस्था
- ◆ परिवार में व्यवस्था
- ◆ समाज में व्यवस्था
- ◆ प्रकृति एवं अस्तित्व में व्यवस्था

◆ समापन

हर मनुष्य की चाहत

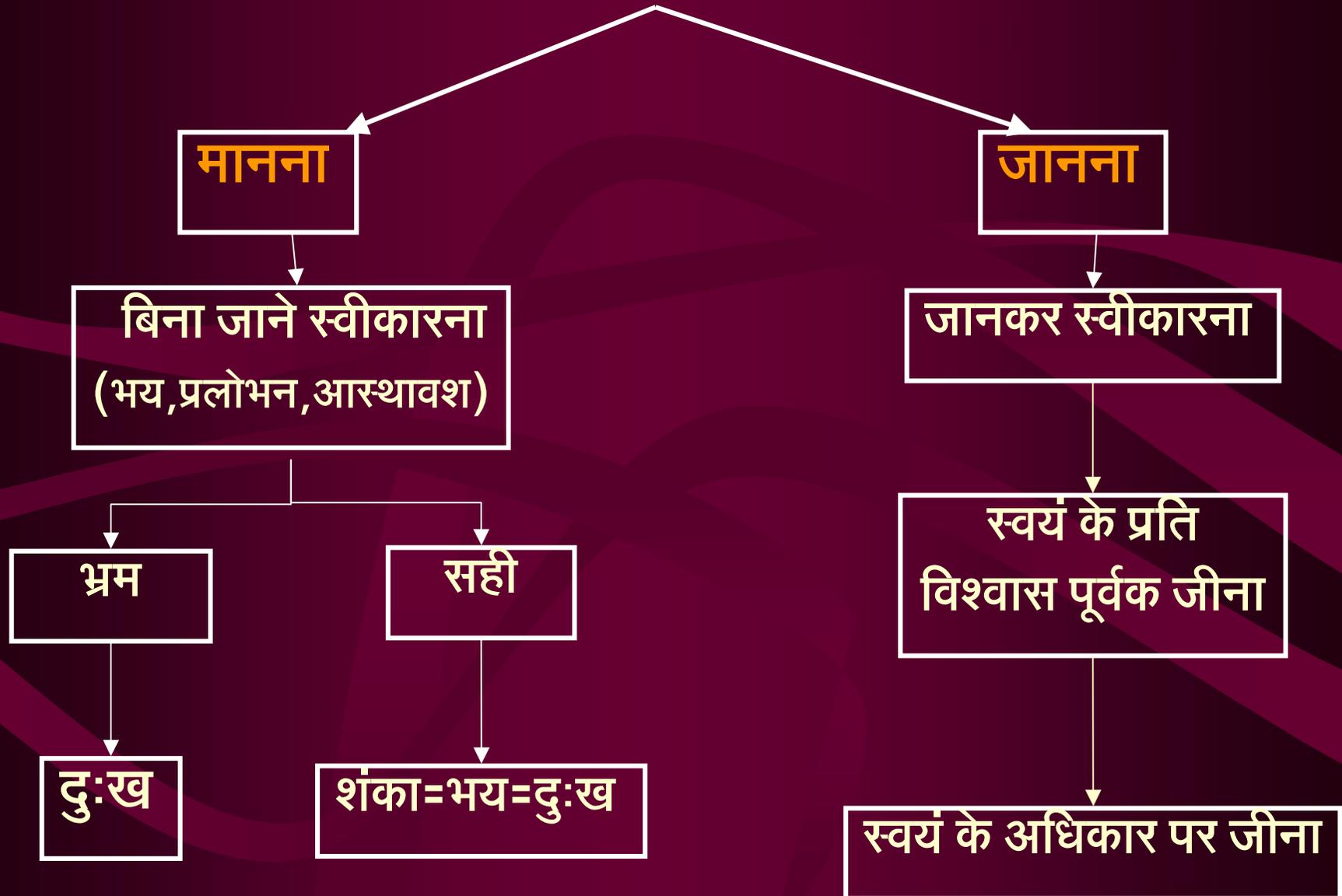


अपनी आर्थिक, मानसिक एवं भावनात्मक आवश्यकताओं
के प्रति आश्वस्त होना



इसी आश्वस्तता का नाम विश्वास पूर्वक जीना है

विश्वास अथवा चाहत पूर्ति के आधार



जाँच हेतू अभ्यासः

बिना जाने मानना

1. मैं जैसा हूँ ।
2. जैसा मैंने स्वयं को मान लिया है ।
3. जैसा मैं दिखना / पाना चाहता हूँ ।

1. जैसा साधन है ।
2. जैसा साधन को मैंने मान लिया है ।
3. जो मैं साधन से पाना चाहता हूँ ।

1. जैसा ईश्वर / भगवान है ।
2. जैसा मैंने मान लिया है ।
3. जो मैं ईश्वर से पाना चाहता हूँ ।

निष्कर्ष

चाहत की पूर्ति होती
नहीं, अथवा



मान्यता प्रमाणित
नहीं होती, अथवा



विश्वास की कमी



भय / दुःख

चाहत पूर्ति के प्रचलित आधार

1

- संग्रह-सुविधा-भोग
- रूप, धन, पद, बल, विशेषज्ञता



- असुरक्षा, भय, अनिश्चितता
- दीनता, हीनता, क्रूरता
- अव्यवस्था = परस्पर विरोध एवं संघर्ष

अनिश्चयता-अस्थिरता मूलक
वस्तु केन्द्रित चिन्तन
अथवा

भौतिकवाद / उपभोक्तावाद



वर्तमान के प्रति अविश्वास

2

- भक्ति, विरक्ति
- नियन्ता, कर्ता=ईश्वर/देवी, देवता



- आस्था, शंका = अनिश्चयता
- दीनता, हीनता, दासता
- अव्यवस्था=शोषण, भेद-मतभेद

रहस्य मूलक ईश्वर केन्द्रित चिन्तन
अथवा

अध्यात्मवाद / ईश्वरवाद



वर्तमान के प्रति अविश्वास

यह शिविर क्या ? चाहत पूर्ति के लिए एक अभिनव प्रस्ताव

वास्तविकता का अध्ययन

1

भौतिकवाद / उपभोक्तावाद



वर्तमान के प्रति अविश्वास

- संबंधो की पहचान मूल्यों का निर्वाह
- परस्पर पूरकता = तालमेल



- समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व
- मानवीय आचरण
- मानवीय व्यवस्था

2

अध्यात्मवाद / ईश्वरवाद



वर्तमान के प्रति अविश्वास

अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन

मध्यस्थ दर्शन

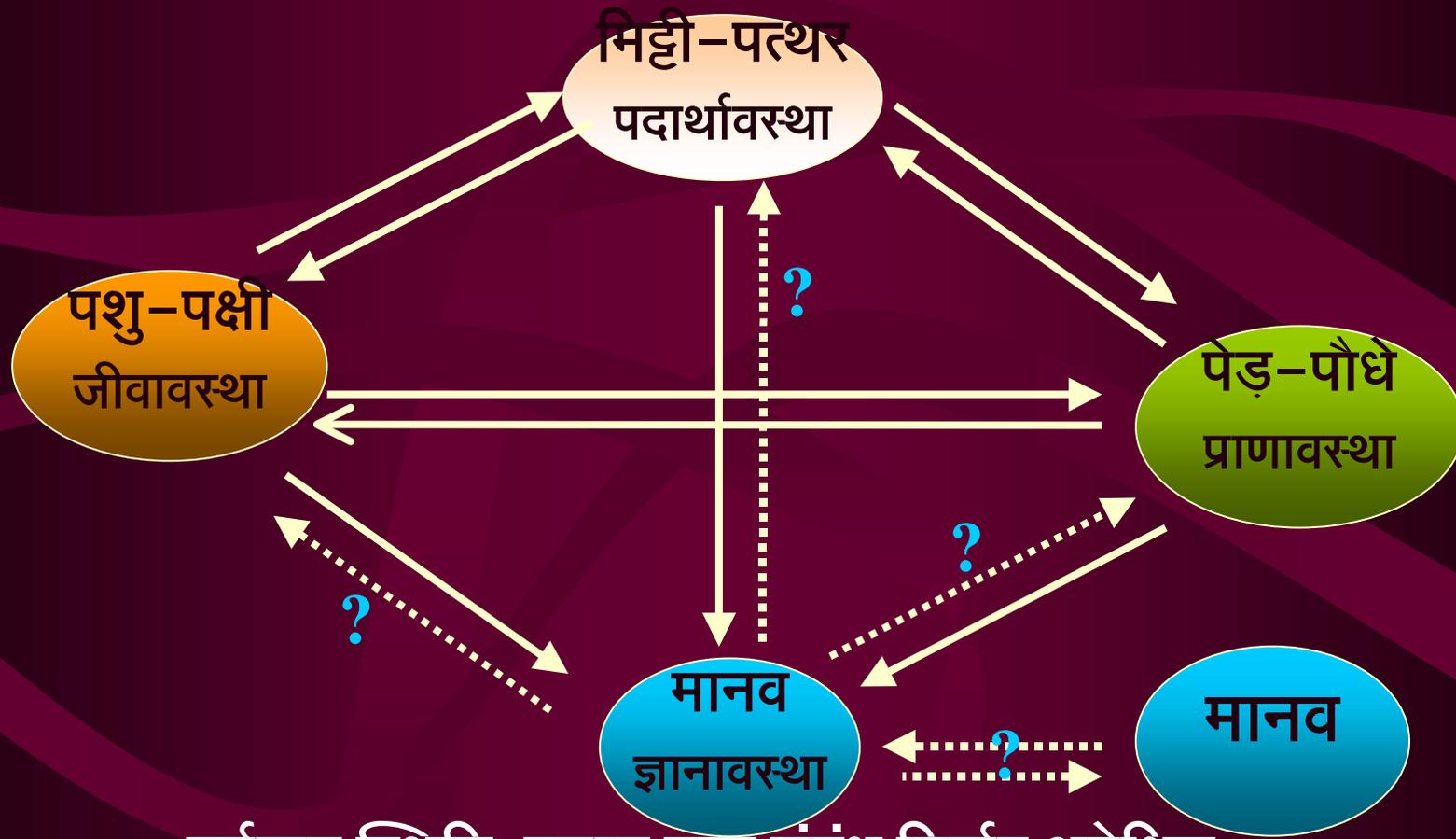
सहअस्तित्ववाद



वर्तमान के प्रति विश्वास

यह शिविर क्यों ?

अस्तित्व सहअस्तित्व है अर्थात संपूर्ण होना (जो कुछ भी है) परस्पर पूरक है
अस्तित्व में हर इकाई स्वयं में व्यवस्था और संपूर्ण व्यवस्था में भागीदार है



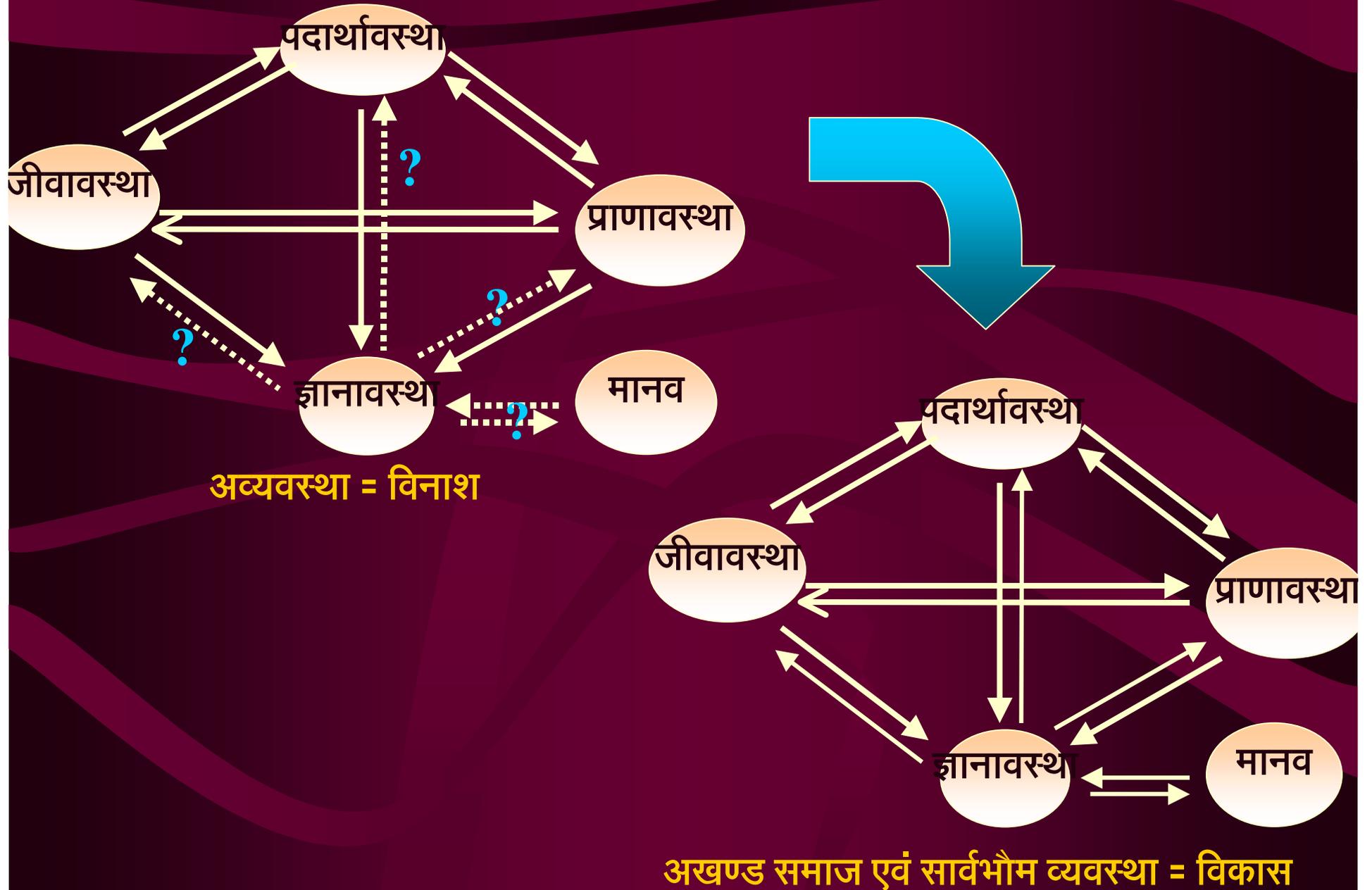
वर्तमान स्थिति: मनुष्य द्वारा संबंध निर्वाह अपेक्षित

कुछ निष्कर्ष

- अस्तित्व में केवल चार अवस्थाएँ हैं
- चार में से तीन अवस्थाएँ परस्पर पूरक हैं
- मनुष्य भी सभी का पूरक होना चाहता है
- मानव समझ में कमी के कारण अन्य वास्तविकताओं से संबंध ठीक से पहचान नहीं पाया है
- संबंध न पहचान पाने के कारण तालमेल पूर्वक जीना नहीं होता । संबंधों को पहचानने का भी प्रयास स्पष्ट दिखता है ।
- तालमेल न होना ही अव्यवस्था है अर्थात् समस्या है

स्वयं से लेकर समग्र व्यवस्था को समझकर उत्सव पूर्वक जीने का राज मार्ग मध्यस्थ दर्शन प्रस्तुत करता है

यह प्रयास और मानव की आकांक्षा



जीवन विद्या शिविर = मध्यस्थ दर्शन की परिचयात्मक प्रस्तुति

दर्शन की विशेषता

- रहस्यवाद और सम्प्रदायवाद से मुक्त
- तर्कपूर्ण है, इसलिए शिक्षा विधि से अध्ययन संभव
- सार्वभौम

यह शिविर = एक यात्रा

- मानना से जानना की ओर
- भय, प्रलोभन एवं आस्था से विश्वास की ओर
- साधन सम्पन्न, दुःखी दरिद्र से साधन सम्पन्न सुखी समृद्धि की ओर
- विरोध से तालमेल की ओर
- कम/अधिक, छोटा/बड़ा से पूरकता की ओर
- हीनता/अहंकार से श्रेष्ठता की ओर
- समस्या से समाधान की ओर यात्रा

आइये, हम सभी उत्सव की इस यात्रा पर चलें

यह शिविर कैसे ? अर्थात् शिविर की शैली

सही का प्रस्ताव: मानना नहीं है, जानना है

जानने की विधि: क्यों ? , क्या ? , कैसे ? , कितना ? के स्पष्ट उत्तर पाना

जांचना है – स्वयं के अधिकार पर

जांचने का तरीका: निरीक्षण

परीक्षण

सर्वेक्षण

जांचने का आधार: मानव सहज

प्रकृति सहज

अस्तित्व सहज

सार्वभौम समझ

जीकर देखना = प्रमाण पाना एवं प्रमाणित होना

व्यवहार

उभय तृप्ति, अखण्ड समाज

कार्य

परिवार समृद्ध, प्रकृति संतुलित

क्रमशः

शिविर की शैली

जीकर देखना = प्रमाण पाना एवं प्रमाणित होना



प्रमाणित होना = निरन्तरता
यही तृप्ति रूपक प्रमाण अनुभव है; विचारों में यही समाधान है ;

फलस्वरूप, स्वयं के प्रति विश्वास

यही हमारी मूल चाहत है

जानना = जो चीज जैसी है उसे वैसा ही समझना
= हर वास्तविकता के बारे में क्यों, क्या, कैसे, कितना
का स्पष्ट होना

- क्यों = उपयोगिता अर्थात सहअस्तित्व में भागीदारी
- क्या = रूप, गुण, स्वभाव, धर्म
- कैसे = प्रगटन
- कितना = उपयोगिता, पूरकता के अर्थ में मात्रा

किसी भी वास्तविकता को जानने के लिए यही चार मूल प्रश्न क्यों है

- क्यों = बड़ी व्यवस्था में भागीदारी
- क्या = इकाई में व्यवस्था
- कैसे = जिन छोटी इकाईयों से मिलकर बनी है, उनमें व्यवस्था
- कितना = बड़ी व्यवस्था में भागीदारी हेतु मात्रा

जानना = जो चीज जैसी है उसे वैसा ही समझना
= हर वास्तविकता के बारे में क्यों, क्या, कैसे, कितना
का स्पष्ट होना

जानने / समझने का निष्कर्ष क्या होगा ?

- अस्तित्व सहअस्तित्व है अर्थात हर इकाई स्वयं में व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदार है
- व्यवस्था = लक्ष्य के अर्थ में अंग अवयव में तालमेल
- यही जानने का आशय है

जाँचने का तरीका

निरीक्षण = स्वयं में जाँचना

परीक्षण = परस्परता में जाँचना

सर्वेक्षण = सार्वभौमता में जाँचना

जाँचने का आधार (अर्थात् सही का सार्वभौम स्वरूप)

मानव सहज = संपूर्ण मानव जाति को सहज स्वीकार्य
= सभी को समान सुख देने वाला

प्रकृति सहज = संपूर्ण प्रकृति में संतुलनकारी

अस्तित्व सहज = जिसकी निरंतरता हो व्यवस्था कारक हो

क्रमशः

कुछ उदाहरण :

जाँचना

मानव सहज = सभी सम्मान, समृद्धि, विश्वास पूर्वक जीना चाहते हैं ।

मानव असहज = दूसरों को दुःख देकर सुखी हुआ जा सकता है

= धन ही मानव की पहचान का आधार है

प्रकृति सहज = स्वयं में व्यवस्था और बड़ी व्यवस्था में भागीदार

(आवर्तनशीलता)

प्रकृति असहज = प्लास्टिक, रासायनिक खाद एवं कीटनाशक

अस्तित्व सहज = समस्त परमाणु, अणु, पदार्थ, वनस्पति, पशुपक्षी (वंश से वंश)

अस्तित्व असहज = बीज परम्परा में बाधा, वंश परंपरा में बाधा,

प्राकृतिक वंश परंपरा में बाधा, प्राकृतिक चक्रों का

उल्लंघन, ऐसी परंपरा जिसमें कुछ मानव अन्य का शोषण करें ।

जीना अर्थात् कार्य और व्यवहार

व्यवहार = मानव का मानव के साथ सुख पाने के लिए किया गया श्रम

उभय तृप्ति = व्यवहार में परस्पर तृप्ति (उभय=दोनों)

कार्य = मानव का मनुष्येत्तर प्रकृति के साथ आवश्यक भौतिक वस्तुएं पाने के लिए किया गया श्रम।

समृद्धि = अभाव का अभाव ; आवश्यकता से अधिक उत्पादन

गरीबी = साधन विहिन दुःखी दरिद्र

अमीरी = साधन सम्पन्न दुःखी दरिद्र

समृद्धि = साधन सम्पन्न सुखी समृद्ध

जाँच हेतू अभ्यासः

जानना, मानना

शब्द	जानना (क्यों, क्या, कैसे, कितना)	मानना
पानी		
सुख		
दुःख		
जीवन		
धन		

जाँच हेतू अभ्यासः

मानव असहज	प्रकृति असहज	अस्तित्व असहज

प्रस्तुति क्रम में हम यहाँ हैं

◆ परिचय: यह शिविर क्या, क्यों और कैसे

◆ प्रस्तुति का संदर्भ

- ◆ मानव के मूल प्रश्न
- ◆ वर्तमान जीने की समीक्षा

◆ मूल विषय वस्तु

- ◆ मानव में व्यवस्था
- ◆ परिवार में व्यवस्था
- ◆ समाज में व्यवस्था
- ◆ प्रकृति एवं अस्तित्व में व्यवस्था

◆ समापन

चाहत की पूर्ति = प्रश्न मुक्ति = समाधान पूर्वक जीना

- मानव के पास कुल कितने प्रश्न ?

बिना जाँचे ऐसा प्रतीत होता है कि प्रश्न तो अनंत हैं

प्रस्ताव – संपूर्ण मानव जाति के मूलतः दो ही प्रश्न हैं

- क्यों जीना है, अर्थात मानव की मूल चाहत क्या है ?
- कैसे जीना है, अर्थात मूल चाहत की पूर्ति की विधि क्या है ?

प्रश्न 1. क्यों जीना है अर्थात मूल चाहत क्या है ?

- चर्चा हेतु प्रश्न: मैं क्यों जी रहा हूँ ?
- सुखी होने के लिए
- सुख कितना चाहिए : निरंतर चाहिए

हर मानव हर पल हर क्षण सुखपूर्वक जीना
चाहता है

जाँच हेतू प्रश्न :

सुख क्या ?

- क्या सुख की उपरोक्त परिभाषा सार्वभौम है ?
- यदि हाँ तो सुख के प्रति हमारी भिन्न मान्यताएँ क्या हैं ?
- केवल सुख ही होगा तो बोर हो जाएंगे ? जाँचिए
- बिना दुःख के सुख का पता कैसे चलेगा ?

सुख क्या ?

निरन्तर सुख की प्राप्ति ही जीने का उद्देश्य है ।

- क्या निरन्तर सुख की कोई सार्वभौम परिभाषा हो सकती है ?
- सबके लिए सुखी होने का नियम एक है या अलग-अलग ?
- यदि अलग-अलग है तो साथ जीना कैसे होगा ?

निरन्तर सुख की सार्वभौम परिभाषा : सहज स्वीकृति के भाव
में जीना ही सुख है

स्वीकृति = व्यक्ति/स्थान/परिस्थिति में तालमेल

तालमेल = इकाई में व्यवस्था और बड़ी व्यवस्था में भागीदारी

व्यवस्था = अंगअवयव में सामंजस्य = वर्तमान में विश्वास

सुख क्या है - निष्कर्ष

- सुख = व्यवस्था को समझना एवं व्यवस्था में जीना = समाधान
- परिवार व्यवस्था को समझना एवं व्यवस्था में जीना = समृद्धि
- समाज व्यवस्था को समझना एवं व्यवस्था में जीना = अभय
- प्रकृति एवं अस्तित्व व्यवस्था को समझना एवं व्यवस्था में जीना = सहअस्तित्व

मूल चाहत = निरन्तर सुख

पाने का तरीका = मानव लक्ष्य = समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व

↓ ↓ ↓ ↓
सुख शांति संतोष आनंद

यही वर्तमान के प्रति विश्वास है। यही निरंतर सुख है।

जाँच हेतू प्रश्न : मनुष्य की मूल चाहत

- हर मानव की मूल चाहत यही है ?
- हर मानव को चाहत तय करना है या केवल पहचानना है ?
- हर मानव की चाहत जन्म के पहले से तय है या बनाना है ?
- क्या कोई इस चाहत को बदल सकता है ?
- प्रचलन में चाहत को पहचानने में क्या गलती हुई ?
- इंजीनियरिंग, मेडिकल, धन, पद, प्रतिष्ठा आदि मूल चाहत हैं या मूल चाहत को पूरा करने के तरीके हैं ?

प्रचलित जीने की विधि में मूल कमी क्या है ?

- मानव की अपूर्ण समझ
- परिवार की अपूर्ण समझ
- समाज की अपूर्ण समझ
- प्रकृति एवं अस्तित्व मानव की अपूर्ण समझ

निष्कर्ष

समस्या = अपूर्ण समझ = भ्रम = दुःख

समाधान = पूर्ण समझ = निरंतर सुख

समझ का तात्पर्य

शब्द	पर्यायवाची शब्द	अर्थ (= व्यवस्था में भागीदारी)	वास्तविकता (= होना, अस्तित्व)
पानी	नीर, जल Water	प्यास बुझाना आदि	$2H + O = H_2O$
चाक	खड़िया, दुद्धि	लिखना, पोताई आदि	Calcium etc.
अंधेरा	Darkness	प्रकाश की कमी	- ? -
भ्रम	Illusion	समझ की कमी	- ? -
दुःख	Unhappiness	सुख की कमी	- ? -

जाँच हेतू बिन्दु

शब्द से वास्तविकता है या किसी वास्तविकता के लिए शब्द एक नाम है ?

- अर्थ व्यवस्था में भागीदारी है, ना कि पर्यायवाची शब्द
- अंधेरा, भ्रम, दुःख का अस्तित्व है क्या ?

कुछ प्रचलित मान्यताओं की जाँच (Slide 1 of 2)

- सुख, दुःख साथ-साथ है ।
- संसार दुःख रूप है ।
- जीवन एक संघर्ष है ।

निष्कर्ष

- भ्रमित मानव के लिए सुख, दुःख साथ है । पूर्ण जागृत मानव के लिए सुख और केवल सुख है ।
- भ्रमित मानव के कारण अव्यवस्थाएं हैं, फलतः संसार दुःख रूप लगता है । जागृत मानव परंपरा होने से संसार सुख और केवल सुख है ।
- भ्रमित मानव के लिए जीवन एक संघर्ष है । पूर्ण जागृत मानव के लिए जीवन नित्य उत्सव है ।

कुछ प्रचलित मान्यताओं की जाँच (Slide 2 of 2)

समस्त दुःखों का कारण

- ◆ होने (जो है) को ठीक-ठीक न पहचान पाना
- ◆ जो नहीं है (भ्रम, दुःख, अंधेरा इत्यादि) उसको शाश्वत मानना
- ◆ समस्या अथवा गलती 'समझ में किस कमी के कारण' के बजाए 'किसकी गलती' पर सारा ध्यान
- ◆ गलती सुधार की वर्तमान प्रक्रिया (अभी का संविधान)
 - ◆ गलती को गलती से रोकना
 - ◆ अपराध को अपराध से रोकना
 - ◆ युद्ध को युद्ध से रोकना

परिणाम

दिनों दिन, सभी आयामों में समस्याओं का बढ़ना

समाधान

जिस तरह अंधेरे को भगाने के लिए अंधेरे से लड़ते नहीं या संघर्ष नहीं करते, केवल प्रकाश रूपी समाधान को लाते हैं, उसी प्रकार हर गलती और दुःख = समझ में कमी।
समाधान = समझ को पूरी करने की व्यवस्था

प्रश्न 2. कैसे जीना है ?

अर्थात्

मूल चाहत की पूर्ति की विधि क्या है ?

अर्थात्

सर्वमानव लक्ष्य (समाधान, समृद्धि, अभय,
सहअस्तित्व) को फलित कराने का तरीका क्या
है ?

जाँच हेतू विश्लेषण :

वर्तमान जीने का आंकलन (Slide 1 of 5)

मानव जाति की समस्त कायिक, वाचिक, मानसिक गतिविधियों का ध्येय

- मैं कुछ हूँ। मैं कुछ पाना चाहता हूँ। मैं कुछ करना चाहता हूँ।

‘कुछ’ अर्थात् अनिश्चयता

चाहत : सभी जो पाना चाहते हैं वह है

- सफलता और सम्मान
- दूसरे हमारी ओर प्यार से ध्यान दें
- मूल्य या भाव सम्पन्नता अर्थात् संबंधों में सामन्जस्य पूर्ण निरन्तरता बनी रहे
 - समृद्धि अर्थात् परिवार में आवश्यकता से अधिक उत्पादन

कार्यक्रम : रूप, पद, धन, विशेषज्ञता की होड़

जाँच हेतु विश्लेषण : वर्तमान जीने का आंकलन (Slide 2 of 5)

कल्पना कीजिये कि A,B,C,D चार व्यक्ति हैं जो कि वर्तमान में सफलता/सम्मान/समृद्धि के पैमाने पर $A < B < C < D$ पर की स्थिति में है

उनके साथ घटता क्या है

- लोग देखते है मगर इर्ष्या से
- जिसे हम सम्मान मान रहे थे वह हीनता/दीनता वश एक भाव भंगिमा है ।
- जैसे जैसे अमीर होते है मानसिक गरीबी, असुरक्षा बढ़ती है समृद्ध तो कभी होते ही नहीं
- अपने से कम को देखकर अहंकार, अधिक के सामने हीन महसूस करते हैं
- दीनता – मैं दूसरों के साथ जीने लायक नहीं
- अहंकार – दूसरे मेरे साथ जीने लायक नहीं

फलस्वरूप A,B,C,D को मिलता क्या है

सफल हुए तो अहंकार
असफल हुए तो हीनता/दीनता } अकेलापन
= दुःख



मान्यता है कि कुछ पाने के लिये कुछ खोना पड़ता है ।

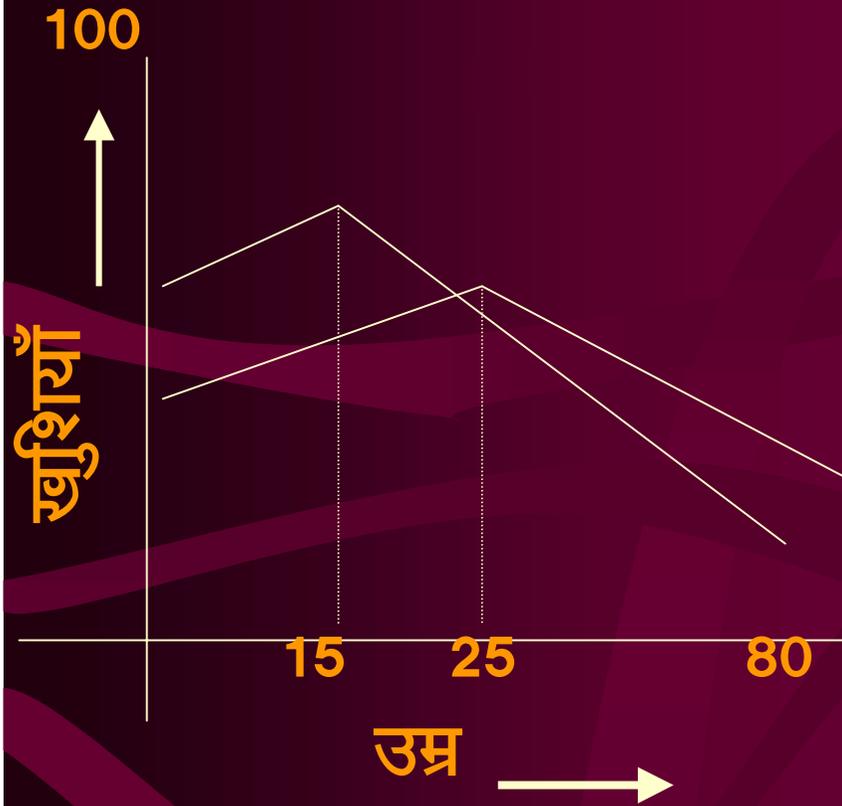
कृपया जांचे- क्या पाया ? क्या खोया ?

जाँच हेतु अभ्यास :

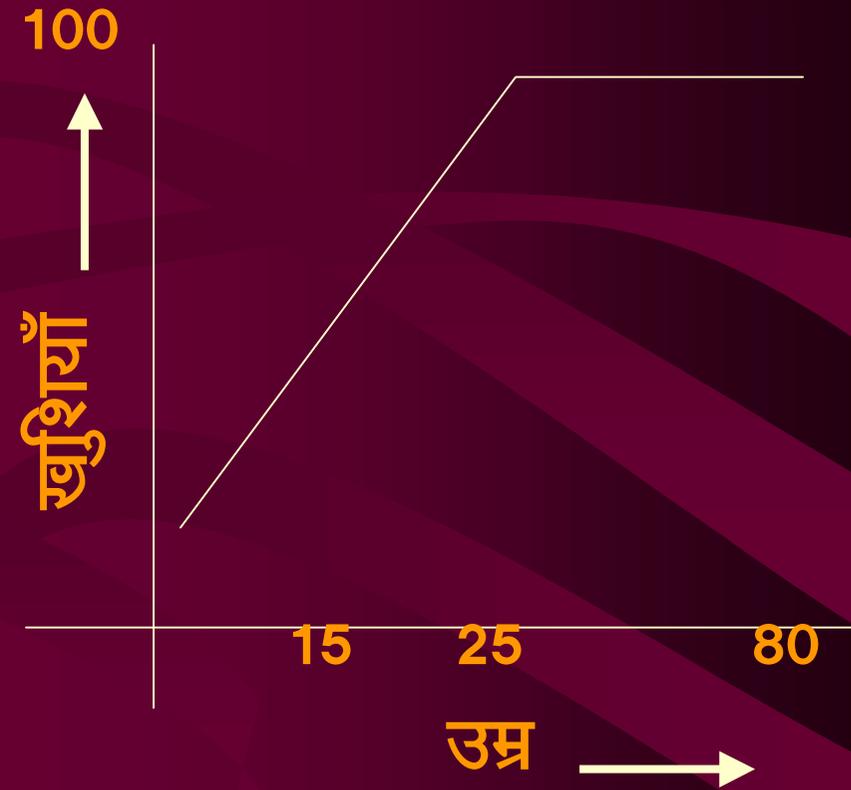
जिन्दगी का ग्राफ : उम्र v/s खुशियाँ (Slide 3 of 5)

जैसा लोग जी रहे हैं

जैसा हम चाहते हैं



श्रम और खुशियाँ में
विपरीत संबंध



श्रम और खुशियाँ में
सामंजस्य

जाँच हेतु विश्लेषण : वर्तमान जीने का आंकलन (Slide 4 of 5)

ऐसे जीने से जो मान्यताएँ फलित अथवा प्रगाढ़ होती हैं

- ◆ मेरा होना = दूसरों का ना होना
- ◆ श्रेष्ठता = जो कुछ लोग ही प्राप्त कर सकें
- ◆ साधन सीमित आवश्यकताएँ अनंत
- ◆ सभी सफल नहीं हो सकते
- ◆ श्रेष्ठता का आधार = भौतिक उपलब्धियाँ

अथवा

संघर्ष, विरोध, इर्ष्या, द्वेष, द्रोह, विद्रोह, युद्ध अनिवार्यताएं

अथवा

दुःख एक निश्चितता

वर्तमान जीने की पद्धति : समीक्षा (Slide 5 of 5)

चाहना	लक्ष्य	विधि	फल परिणाम
अच्छा लगना क्षणिक सुख	<ul style="list-style-type: none">■ इन्द्रिय आस्वादन■ सुविधा संग्रह■ भौतिक आधार पर पहचान	दूसरों से अधिक धन, पद, बल, विशेषज्ञता	व्यक्ति = हीनता, अहंकार, दुःख, बोरियत परिवार = में मतभेद, इर्ष्या द्वेष, कलह = साधन संपन्न दुःखी दरिद्र एवं साधन विहीन दुखी दरिद्र समाज = द्रोह, विद्रोह, शोषण, भय प्रकृति = नाश, असंतुलन

निष्कर्ष: समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व साकार नहीं हुआ

समस्या: मेरा होना = दूसरों का ना होना

समाधान: दूसरों का होना = मेरा होना

अभी तक प्रस्तुत किया गया

प्रश्न 1. जीना क्यों ?

उत्तर : निरन्तर सुख के लिए ।

प्रश्न 2. जीना कैसे अथवा निरन्तर सुख की प्राप्ति कैसे होगी ?

उत्तर : पूर्ण समझ = समाधान द्वारा ।

कैसे जीना है , अथवा सही जीने का विज्ञान ,
अथवा समझना क्या है ?

- मानव में व्यवस्था को समझना
- परिवार में व्यवस्था को समझना
- समाज में व्यवस्था को समझना
- प्रकृति एवं अस्तित्व में व्यवस्था को समझना

समझना कैसे है ?

- मानव में व्यवस्था को समझना
- अन्य सभी वास्तविकताओं में व्यवस्था को समझना
- दोनों के बीच संबंध की पहचान
- मूल्यों का निर्वाह
- मूल्यांकन
- उभय तृप्ति: फलस्वरूप, परिवार में समृद्धि एवं प्रकृति में संतुलन

प्रस्तुति क्रम में हम यहाँ हैं

◆ परिचय: यह शिविर क्या, क्यों और कैसे

◆ प्रस्तुति का संदर्भ

◆ मानव के मूल प्रश्न

◆ वर्तमान जीने की समीक्षा

◆ मूल विषय वस्तु

◆ मानव में व्यवस्था

◆ परिवार में व्यवस्था

◆ समाज में व्यवस्था

◆ प्रकृति एवं अस्तित्व में व्यवस्था

◆ समापन

मानव में व्यवस्था

- ◆ मानव की आवश्यकताएँ
- ◆ मानव की संरचना
 - ◆ मैं क्या है
 - ◆ मानव क्या है
 - ◆ शरीर क्या है
- ◆ जीवन की क्रियाएं

मानव में व्यवस्था :

मानव की आवश्यकता

- मानव की संपूर्ण आर्थिक, मानसिक, भावनात्मक आवश्यकताओं का विश्लेषण

आहार, आवास,
दूरगमन, दूरदर्शन, दूरश्रवण

सुविधा

विश्वास, सम्मान, स्नेह, न्याय
समझ (ज्ञान)

सुख

मानव में व्यवस्था :

सुख, सुविधा में भेद

आवश्यकता किसकी	सुविधा = शरीर के लिए	सुख = मन 'मैं' के लिए
<ul style="list-style-type: none">■ अच्छा लगना■ आवश्यकता की अवधि■ आवश्यकता की मात्रा■ कैसे मिले	<p>क्षणिक निरंतर नहीं सीमित प्रकृति से श्रम पूर्वक</p>	<p>निरंतरता की संभावना निरंतर नाप, तौल नहीं (असीम) सही समझ एवं व्यवहार के आधार पर भाव, शाश्वत भारहीन जीवन क्रिया (आशा, विचार, इच्छा)</p>
<ul style="list-style-type: none">■ प्रकृति / प्रकार■ क्रिया	<p>भौतिक, रासायनिक परिवर्तनशील, भार युक्त भौतिक / रासायनिक</p>	
<ul style="list-style-type: none">■ प्रयोजन	<p>मैं के प्रमाणित होने के लिए स्वस्थ शरीर</p>	<p>प्रामाणिकता</p>

सुख सुविधा में भेद से कुछ निष्कर्ष

- ◆ सुख से सुविधा नहीं, सुविधा से सुख नहीं अर्थात् दोनों चाहिए, साथ-साथ चाहिए : दोनों के लिए कार्यक्रम अनिवार्य अलग-अलग है
- ◆ मानव केवल शरीर नहीं है
- ◆ शरीर एक भौतिक/रासायनिक वास्तविकता है जिसकी आवश्यकता भी भौतिक/रासायनिक है
- ◆ मन या 'मैं' भौतिक/रासायनिक नहीं है। इसलिए 'मैं' की आवश्यकता विश्वास, सम्मान, पहचान, न्याय है – जो कि भौतिक/रासायनिक नहीं है।

अतः मानव की मूलभूत आवश्यकता दो प्रकार की है

1. विश्वास, सम्मान, पहचान, न्याय एवं
 2. रोटी, कपड़ा और मकान
- ◆ 'मैं' और शरीर के साथ-साथ होने का नाम मानव है

चर्चा हेतु कुछ प्रश्न

- ◆ वर्तमान में मानव जाति का लगभग समस्त प्रयास केवल शरीर की आवश्यकता को पूरा करने में समर्पित है क्यों ?
- ◆ स्वयं की आवश्यकता प्यार, विश्वास के बारे में बोलते तो हैं कि इसे पैसे से नहीं खरीदा जा सकता, लेकिन अधिकांश को जीते हुए देखते हैं तो लगभग सभी का जीवन दर्शन यही लगता है – धन से सब ठीक हो जाएगा/पाया जा सकता है ।
- ◆ बात करते समय भौतिक आवश्यकता सीमित लगती है लेकिन जीते समय असीमित लगती है । क्यों ?
- ◆ महिलाओं से उम्र एवं पुरुषों से आमदनी नहीं पूछना चाहिए इस मर्यादा की जड़े कहाँ हैं ? ऐसा क्यों है ?

चर्चा हेतु कुछ प्रश्न

- ◆ समाज में मानव की पहचान/सम्मान का मुख्य आधार धन क्यों हो गया ?
- ◆ 'आवश्यकताएँ असीम हैं , साधन सीमित हैं' प्रचलित अर्थशास्त्र की एक स्थापित मान्यता – क्या यह सही है
- ◆ किशोर एवं युवाओं में माता-पिता के प्रति शिकायत ऐसे भी सुनने मिलती है – आपने हमारे लिए किया ही क्या है ?
- ◆ उम्र बढ़ने के साथ छात्रों में माता-पिता व शिक्षकों के प्रति सम्मान घटता जा रहा है क्यों ?
- ◆ व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, राजनैतिक राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सारे प्रयासों के बावजूद समस्याएं बढ़ रही हैं क्यों ?

मानव में व्यवस्था :

‘ मैं ’ क्या है: प्रस्ताव

1. मैं जीना चाहता है इसलिए एक नाम ‘ जीवन ’ है
अर्थात् मैं = जीवन = स्वयं
2. ‘जीवन ’ एक भारहीन इकाई है । (आशा, विचार, इच्छा, समझ, अनुभव
में भार नहीं)
3. मैं निरन्तर सुख पूर्वक जीना चाहता हूँ
4. ‘जीवन ’ की सभी आवश्यकताएं विश्वास, सम्मान, स्नेह, न्याय,
पहचान इत्यादि भारहीन हैं
5. मैं सही भाव के साथ जीता हूँ तो सुखी होता हूँ ।

क्रमशः

मानव में व्यवस्था :

‘ मैं ’ क्या है: प्रस्ताव

6. जीवन पाँच अक्षय बलों का अविभाज्य रूप है । यह पाँच बल पाँच अक्षय शक्तियों (आशा, विचार, इच्छा, समझ, प्रामाणिकता) के रूप में अभिव्यक्त होते हैं । अक्षय अर्थात् निरन्तर = कभी न समाप्त होने वाला ।
7. सम्पूर्ण को समझ कर ही मैं तृप्त होता हूँ । सम्पूर्ण के साथ तालमेल पूर्वक जीकर अपनी समझ को प्रमाणित करता हूँ ।
8. सम्पूर्ण को समझने के लिए और प्रमाणित करने के लिए शरीर का चलाना मेरी आवश्यकता है । अतः शरीर मेरा साधन है ।
9. अर्थात् मैं हूँ और शरीर को चलाता हूँ तो मानव कहलाता हूँ ।

मानव में व्यवस्था :

‘ मानव ’ क्या है: प्रस्ताव

- जीवन और शरीर का साथ-साथ होना मानव है ।
- हर मानव अपने महत्व को जानकर तृप्त होता है ।
- मानव का महत्व उसकी उपयोगिता ही है ।
- परिवार में सुख (संबंधों में तालमेल) एवं समृद्धि पूर्वक (आवश्यकता से अधिक उत्पादन) जीने में अपनी भागीदारी को प्रमाणित करना ही मानव की उपयोगिता है । यही समझदारी का प्रमाण है । यही मानव पद है ।
- मानव की उपयोगिता को सिद्ध करने हेतु प्रथम एवं आधारभूत कार्यक्षेत्र परिवार ही है ।

मानव में व्यवस्था :

‘मानव’ क्या है: प्रस्ताव

- लेकिन जीवन अक्षय बल एवं शक्ति सम्पन्न है इसलिए संपूर्ण को समझना व संपूर्णता में जीना चाहता है ।
- ◆ अतः समाज में सभी सुख/समृद्धि पूर्वक जी सकें, इस हेतु अपनी निश्चित भागीदारी का निर्वाह करना, मेरे सुख पूर्वक जीने के लिए मेरी आवश्यकता है ।
- अखण्ड समाज एवं सार्वभौम व्यवस्था को सुनिश्चित करने हेतु योगदान ही समाज में मानव की स्थायी पहचान/सम्मान का आधार है । यही देव मानव पद है ।

मानव में व्यवस्था :

‘मानव’ क्या है: प्रस्ताव

- जीवन अक्षय बल शक्ति सम्पन्न है इसलिए मानव सम्पूर्ण को समझना चाहता है । सम्पूर्ण को समझकर, और संपूर्णता में जीना ही प्रेममयता है । यही मानव के विकास का चरम है । यही दिव्य पद है । यही निरन्तर सुख की स्थिति है । यही भ्रम मुक्ति है, यही मोक्ष है ।

मानव में व्यवस्था :

‘शरीर’ क्या है ?

- 5 ज्ञानेन्द्रियों एवं 5 कर्मेन्द्रियों से सम्पन्न भौतिक/रासायनिक संरचना है ।
- ‘जीवन ’ में निरन्तर सुखी होने की चाहत है । जीवन समाधान पूर्वक सुखी होता है ।
- ‘जीवन ’ के सम्पूर्ण को समझने और समझ को प्रमाणित करने के लिए शरीर एक मात्र विकल्प है ।
- शरीर किसी मां के गर्भ में ही बनता है ।
- मानव गर्भ में लगभग 4 माह बाद शरीर की संरचना पूरी होते ही कोई जीवन अपनी स्वीकृति के आधार पर शरीर को चलाना शुरू करता है ।

मानव में व्यवस्था :

‘शरीर’ क्या है ?

- जीवन द्वारा गर्भ में शरीर को चलाना शुरू करते ही बच्चा गर्भ में हलचल शुरू करता है। इसका मां को पता चलता ही है।
- जीवन अस्तित्व में है ही। यह गर्भ में नहीं बनता।
- इस प्रकार प्रजनन विधि से माता-पिता केवल शरीर के माता-पिता हैं।
- जिस प्रकार अस्तित्व सहज विधि से जड़ परमाणु होते ही हैं, उसी प्रकार जीवन भी अस्तित्व में है ही।

शरीर और 'जीवन' (मैं) को स्पष्टता से समझने के क्रम में मानव में कुछ क्रियाओं का अध्ययन

बाल बढ़ना, लिखना, गाना, विश्लेषण, दूसरों से बात करना, भोजन करना, उम्र बढ़ना, समझ, पाचन क्रिया, दिल धड़कना, आशा, विचार, चित्रण, नाखुन बढ़ना, चिंतन, अनुभव, चलना, उठना, बैठना, दूसरों को सुनना, सांस लेना, पलक झपकना,

शरीर प्रधान क्रिया	मानव प्रधान क्रिया	'जीवन' प्रधान क्रिया

जांच हेतु अभ्यास :

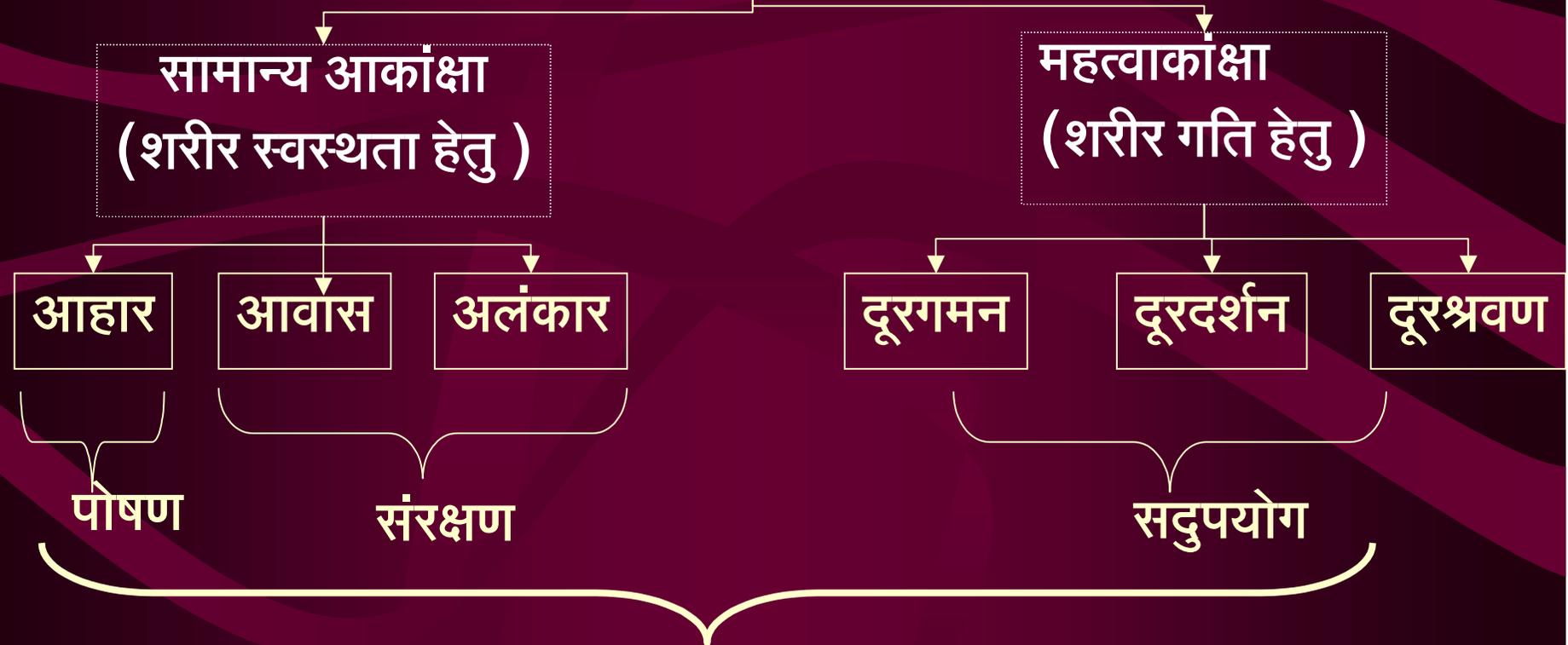
शरीर, जीवन में भेद

- ◆ बोलने/सुनने का काम कौन करता है – ‘ मैं ’ (जीवन) या शरीर
- ◆ कौन देखता है – ‘ मैं ’ या आंख (शरीर)
- ◆ कौन सोता है – ‘ मैं ’ या शरीर
- ◆ चोट लगने पर दर्द कहां होता है – ‘ मैं ’ या शरीर
- ◆ कौन सूंघता है – ‘ मैं ’ या नाक (शरीर)
- ◆ कौन स्वाद लेता है – ‘ मैं ’ या जीभ (शरीर)
- ◆ कौन मरता है – ‘ मैं ’ या शरीर
- ◆ स्त्री या पुरुष कौन है – ‘ मैं ’ या शरीर
- ◆ बच्चा, जवान, बूढ़ा कौन है – ‘ मैं ’ या शरीर
- ◆ जन्म किसका होता है – ‘ मैं ’ या शरीर
- ◆ भोजन और सुविधाएं किसके लिए – ‘ मैं ’ या शरीर
- ◆ सुख विश्वास किसके लिए – ‘ मैं ’ या शरीर

मानव की परिभाषा

मनाकार को साकार करने वाला, मनः स्वरथता का
आशावादी और प्रमाणित करने वाला

मनाकार (शरीर के लिए)



आवश्यकता से अधिक उत्पादन = समृद्धि = मनाकार साकार

मानव की परिभाषा

मनाकार को साकार करने वाला, मनः स्वस्थता का
आशावादी और प्रमाणित करने वाला

मनःस्वस्थता (मैं = जीवन = स्वयं के लिए)

न्याय
परिवार में

मानव का मानव के
साथ संबंध की
पहचान

धर्म (मानवीय व्यवस्था)
समाज में

मानव का संपूर्ण
प्रकृति के साथ
संबंध की पहचान

सत्य (सार्वभौम व्यवस्था)
अस्तित्व में

मानव का संपूर्ण
अस्तित्व के साथ
संबंध की पहचान

सही समझ पूर्वक एवं सही कार्य व्यवहार के द्वारा मनः स्वस्थता प्रमाणित

जीवन की क्रियाएँ

—

—

—

—

—

—

—

चित्रण

इच्छा

तुलन

विश्लेषण

विचार

प्रिय

हित

लाभ

आस्वादन

चयन

आशा

आस्वादन तीन प्रकार के होते हैं

- रुचि मूलक = इंद्रिय सापेक्ष
- मूल्य मूलक = संबंध सापेक्ष
- लक्ष्य मूलक = व्यवस्था सापेक्ष

प्रयोजन

स्वस्थ शरीर

अखण्ड समाज

सार्वभौम व्यवस्था

साढ़े चार क्रियाओं में तुलन की दृष्टियाँ

- प्रिय = इंद्रिय सापेक्ष
- हित = शरीर स्वरथता सापेक्ष
- लाभ = साधन (भौतिक वस्तु) सापेक्ष

साढ़े चार क्रिया का कार्यकलाप

उपेक्षित रहते हैं

अनुभव
बोध

भ्रमवश स्वयं को शरीर मानने के फलस्वरूप समस्त लक्ष्य एवं कार्यक्रम शरीर सापेक्ष अर्थात् सुविधा से सुख पाने का प्रयास

(भ्रमित) इच्छा

(भ्रमित) विचार

(भ्रमित) आशा

नई
इच्छा

कार्य

व्यवहार

सफल

असफल

सफल

असफल

अमीरी

गरीबी

क्षणिक सुख

दुःख

दरिद्रता

अतृप्ति

दुःख , दरिद्रता

भ्रम के कारण तीन प्रकार के बंधन

- आशा बंधन = इंद्रियों द्वारा निरंतर सुखी होने का प्रयास
- विचार बंधन = अपने विचारों को श्रेष्ठ मानने के आधार पर निरंतर सुखी होने का प्रयास
- इच्छा बंधन = भ्रमित कल्पनाओं (मनाकार) की पूर्ति से निरंतर सुखी होने का प्रयास

जागृत अथात जावन का दसा क्रियाआ का चालत हाना

चिंतन बल विधि से आरंभ होता है

अनुभव

प्रामाणिकता

प्रमाण

बोध

संकल्प

ऋतंभरा

चिंतन

चित्रण

इच्छा

तुलन

विश्लेषण

विचार

न्याय	धर्म	सत्य
प्रिय	हित	लाभ

आस्वादन

चयन

आशा

कार्य

व्यवहार

तुलन की दृष्टियाँ

- न्याय = मानव-मानव संबंध सापेक्ष
- धर्म = मानव-मनुष्येत्तर प्रकृति संबंध सापेक्ष
- सत्य = सार्वभौम व्यवस्था (सह अस्तित्व एवं प्रामाणिकता) सापेक्ष

से मर्यादित

- प्रिय = इंद्रिय सापेक्ष
- हित = शरीर स्वस्थता सापेक्ष
- लाभ = साधन (भौतिक वस्तु) सापेक्ष

स्पष्टता हेतु परिभाषाएं

- चिंतन – अर्थ का स्पष्ट होना ; मूल्यों का साक्षात्कार होना
- बोध – अर्थ के प्रति शंका मुक्ति (फलस्वरूप, जीने का संकल्प)
- अनुभव – कार्य-व्यवहार में प्रमाणित होना (फलस्वरूप, निरंतरता)

चिंतन का उदाहरण: साधनों की स्पष्ट समझ

साधन का अर्थ = धरती का समस्त साधन केवल शरीर के पोषण, संरक्षण एवं सदुपयोग हेतु है।

भौतिक वस्तुओं में अर्थात् साधन में मूल्य

- (1) उपयोगिता मूल्य
- (2) कला मूल्य

साधन की समझ में निरंतरता = स्वयं एवं पारिवारिक आवश्यकता की पहचान = कम-अधिक, छोटा-बड़ा से मुक्ति: उपयोगिता की पहचान = सामान से सम्मान के भ्रम से मुक्ति

अनुभव मूलक विधि से जीना

बल

क्रियाएं

शक्ति

आत्मा

अनुभव

प्रामाणिकता

प्रमाण

बुद्धि

बोध

संकल्प

ऋतंभरा

चित्त

चिंतन

चित्रण

इच्छा

वृत्ति

तुलन

विश्लेषण

विचार

मन

आस्वादन

चयन

आशा

सार्वभौम व्यवस्था
में भागीदारी

समाधान, समृद्धि
संपन्न परिवार, फलतः

अखण्ड समाज
में भागीदारी

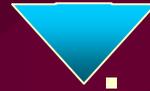
मानव

- ◆ मानव क्या ? शरीर और जीवन का संयुक्त साकार रूप है
- ◆ मानव क्यों ?
 - ◆ स्वयं को प्रमाणित करने के लिए
 - ◆ मानव लक्ष्य को साकार करने के लिए
 - ◆ निरन्तर सुख / समृद्धि पूर्वक जीने के लिए
- ◆ मानव कैसे ?
 - ◆ शरीर किसी माँ के गर्भ में बनता है
 - ◆ जीवन का होना अस्तित्व सहज घटना है
- ◆ मानव कितना ? धर्ती पर उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के अनुपात में

जांच हेतू चर्चा :

प्रचलित अर्थशास्त्र v/s सत्यता (Slide 1 of 4)

‘आवश्यकताएं अनंत हैं, साधन सीमित हैं’



मानव की आवश्यकताएं पूरी हो ही नहीं सकती



मानव का दुःखी रहना एक निश्चितता



सृष्टि अपूर्ण ?

प्रचलित अर्थशास्त्र V/S सत्यता (Slide 2 of 4)

- ◆ मानव – शरीर व जीवन का सम्मिलित रूप है ।
- ◆ शरीर एक भौतिक-रासायनिक रचना है ,सीमित है । क्यों कि शरीर का आकार, आयतन, भार, आयु सीमित है इसलिए शरीर की आवश्यकता भी सीमित है ।
- ◆ धरती पर उपलब्ध साधन पर्याप्त है क्योंकि – मिट्टी, हवा, पानी, प्रकाश >>> पेड़-पौधे >>> पशु-पक्षी >>> मानव
- ◆ मानव में आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने की क्षमता है इसलिए हर मानव समृद्धि पूर्वक जी सकता है ।

प्रचलित अर्थशास्त्र V/S सत्यता (Slide 3 of 4)

(मध्यस्थ दर्शन के प्रकाश में प्रस्तावित अर्थशास्त्र)

- मानव की भौतिक आवश्यकता सीमित है, साधन पर्याप्त हैं। मानव में आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने की क्षमता है। अतः हर मानव सही समझ के साथ समृद्धि पूर्वक जी सकता है।
- मानव की मानसिक/भावनात्मक आवश्यकताएं असीम हैं मानव में समझने की क्षमता भी असीम है तथा ज्ञान सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध है। शाश्वत है। अतः हर मानव निरन्तर सुख पूर्वक जी सकता है।

प्रचलित अर्थशास्त्र v/s सत्यता (Slide 4 of 4)

गलती क्या हुई ?

भ्रमवश पहचान/सम्मान को सामान,साधन से जोड़ दिया

गलती क्यों हुई ?

भ्रमवश स्वयं को शरीर मानकर जीना , अर्थात्
सुविधा को सुख मान लेना

फलतः

सीमित वस्तु (भौतिक संसाधन, इंद्रिय संवेदना) से ज्ञान, भाव की
निरन्तर आवश्यकता को पूरा करने का असफल प्रयास

फलतः

व्यक्ति, परिवार, समाज, प्रकृति – हर स्तर पर अव्यवस्था

प्रस्तुति क्रम में हम कहाँ हैं

◆ परिचय: यह शिविर क्या, क्यों और कैसे

◆ प्रस्तुति का संदर्भ

◆ मानव के मूल प्रश्न

◆ वर्तमान जीने की समीक्षा

◆ मूल विषय वस्तु

◆ मानव में व्यवस्था

◆ परिवार में व्यवस्था

◆ समाज में व्यवस्था

◆ प्रकृति एवं अस्तित्व में व्यवस्था

◆ समापन

परिवार में व्यवस्था

- ◆ परिवार क्यों ? – परिवार से 'जीवन' को क्या अपेक्षा है ?
 1. शरीर
 2. पोषण एवं संरक्षण
 3. सुख/समृद्धि पूर्वक जीने हेतु समझ
- ◆ परिवार क्या ? – मानव के प्रमाणित होने के लिए सबसे छोटी व्यवस्था। निश्चित मानव समूह के सुख/समृद्धि पूर्वक जीने की व्यवस्था।
- ◆ परिवार कैसे ? –
 1. संबंध की पहचान
 2. मूल्यों का निर्वाह
 3. मूल्यांकन
 4. उभयतृप्ति एवं परिवार में समृद्धि
- ◆ परिवार कितना ? – परिवार में सदस्य संख्या क्या हो ?

परिवार में व्यवस्था

निष्कर्ष:

परिवार में व्यवस्था को समझने के लिए परिवार में

- लक्ष्य
- संबंध
- संख्या

का स्पष्ट होना आवश्यक है

परिवार में व्यवस्था

परिवार में लक्ष्य = मैं (जीवन) द्वारा मानव रूप में स्वयं को जानना, पहचानना व प्रमाणित करना

= मानव लक्ष्य (समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व) के क्रम में समाधान, समृद्धि को प्रमाणित करना

लक्ष्य के अर्थ में आवश्यकता – सभी प्रौढ़ समझदार, परिवार समृद्ध तथा सभी बच्चों के समझदार होने के लिए पूर्ण अनुकूल अवसर

परिवार में संबंध = पूर्णता के अर्थ में अनुबंध ।

= मानव लक्ष्य को पाने के अर्थ में परस्पर सहयोगी होने के लिए सहज स्वीकृति एवं कार्य-व्यवहार

परिवार में व्यवस्था

संबंध में मूल्य होते हैं ।

मूल्य = उपयोगिता ।

संपूर्ण उपयोगिता मानव की मूल चाहना और मानव लक्ष्य के अर्थ में ही है ।

संबंधों में मूल्य:

- स्थापित मूल्य = स्थिति में
- शिष्ट मूल्य = अभिव्यक्ति में

संबंधों में आधार मूल्य: (1) विश्वास

■ विश्वास

- आधार मूल्य
- स्वयं के प्रति आश्वस्त होना
- गलती न होना (गलती = इच्छा, विचार, कार्य-व्यवहार के स्तर पर तालमेल न होना)



जानना = क्यों, क्या, कैसे, कितना

जाँचना = मानव सहज, प्रकृति सहज, अस्तित्व सहज

सही व्यवहार = उभय तृप्ति

सही कार्य = परिवार में समृद्धि, प्रकृति में संतुलन

प्रमाण = समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व

क्रमशः

संबंधों में आधार मूल्य: (1) विश्वास

अनुभव

समझ

इच्छा

विचार

आशा

कार्य

व्यवहार

1 सर्तकता = सही समझ के आधार पर स्मरण पूर्वक जीना (5 → 4 → 3) कार्य -व्यवहार में गलतियों का कम होना /सही अधिक होना ।

2 सजगता = सही समझ के आधार पर अभ्यास पूर्वक जीना (3 → 2 → 1) कार्य-व्यवहार में गलती न होना । स्वयं के प्रति आश्वस्त होना । दूसरों का हमारे प्रति आश्वस्त होना ।

3
4
5 सहजता = कार्य व्यवहार में पूर्ण समझदारी की निरन्तरता भ्रम मुक्ति, मोक्ष, मानव का चरम विकास = दिव्य मानव ,प्रेम पूर्ण मानव

संबंधों में आधार मूल्य: (2) सम्मान

- **सम्मान** = सम + मान = सम्यक + मान
= सही आंकना = मूल्यांकन
- वर्तमान (भ्रम वश) आंकने का आधार – रूप, धन, पद, विशेषज्ञता, रंग, जाति, भाषा
- ऐसा क्यों ? स्वयं को शरीर मानना फलतः शरीर अथवा अन्य साधनों के आधार पर आंकना ।
- सही आंकना या मूल्यांकन कैसे हो ? आधार क्या हो ?
मनुष्य की समझ / विचार , कार्य , व्यवहार

- ◆ मैं 'जीवन' हूँ । स्त्री/पुरुष शरीर चलाता हूँ ।
दूसरा भी 'जीवन' है । स्त्री/पुरुष शरीर चलाता है ।
- ◆ मैं निरन्तर सुख पूर्वक जीना चाहता हूँ ।
दूसरा भी निरन्तर सुख पूर्वक जीना चाहता है ।
- ◆ मुझे निरन्तर सुख पूर्वक जीने के लिए मानव लक्ष्य (समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व) को साकार करना है ।
दूसरा भी निरन्तर सुख पूर्वक जीने के लिए मानव लक्ष्य को साकार करना चाहता है ।
- ◆ मैं गलती करना नहीं चाहता क्योंकि, गलती = दुःख ।
दूसरा भी गलती करना नहीं चाहता क्योंकि, गलती = दुःख ।
- ◆ मैं दूसरों को दुःख नहीं देना चाहता क्योंकि दुःख देना = गलती ।
दूसरा भी मुझे दुःख नहीं देना चाहता क्यों कि दुःख देना = गलती

सम्मान की प्रक्रिया (Slide 2 of 3)

- समझ में कमी के कारण मुझसे गलती हो जाती है ।
उसी प्रकार, दूसरे की समझ में कमी के कारण उससे भी गलती हो जाती है ।
- अतः गलती होने पर डांटना, ग्लानि होना या अपमानित न किया जाए वरन समझ को पूरा किया जाए ।
दूसरे के साथ भी यही कार्यक्रम बनता है ।

निष्कर्ष

1. मानव जानबूझ कर गलती नहीं करता ।
2. गलती = समझ में कमी की सूचना ।
3. गलती है तो समझ नहीं है ; समझ है तो गलती नहीं होगी ।

जाँच हेतू अभ्यास : **सम्मान की प्रक्रिया** (Slide 3 of 3)

परस्पर जीने में तीन ही स्थितियां हो सकती हैं:

A और B समझ में बराबर



दोनों के लिए अवसर की दूसरों को समझ उपलब्ध कराये

A अधिक समझदार



A के लिए B प्रमाणिकता का अवसर, B के लिए A पूरक

B अधिक समझदार



B के लिए A प्रमाणिकता का अवसर, A के लिए B पूरक

अतः, इर्ष्या, द्वेष की जगह नहीं बनती ।

प्रतियोगिता = स्वयं से, स्वयं में, स्वयं की पूर्णता के प्रति योग/प्रयास ।

जाँच हेतू अभ्यास :

हमारे दुःख के लिए जिम्मेदार कौन ?

उदाहरण – राम और श्याम – दो मित्र

राम ने श्याम से कुछ मांगा ; श्याम नहीं दे सका ।

राम दुःखी हुआ । कारण क्या हो सकता है ?

- श्याम के पास था ही नहीं ।
- आस्वस्त न होने के कारण श्याम देना नहीं चाहता था ।
- श्याम ने किसी और को दिया हुआ था ।
- राम दुरुपयोग करेगा ।
- राम ने पहले कोई सामान नहीं दिया था ।
- श्याम को लगता है कि वह वस्तु राम के लिए आवश्यक नहीं ।
- श्याम को वह वस्तु किसी और को देनी थी ।
- श्याम को लगा वस्तु वापस नहीं मिलेगी ।
- श्याम राम को दुःखी करना चाहता है ।

जांच हेतू अभ्यास :

हमारे दुःख के लिए जिम्मेदार कौन ?

निष्कर्ष : राम अपनी समझ में कमी के कारण ही दुःखी है ।

समझ में कमी ही मूल अक्षमता है ।

सक्षमता = समझना	जीना	समझाना
सीखना	करना	सिखाना

परस्परताओं में अपेक्षाओं की अपूर्ति से दुःखी होना स्वयं की अक्षमता वश ही है ।

परिवार में मानव की परस्परता में मूल्य

■ स्थापित मूल्य

➤ शिष्ट मूल्य

- स्नेह = मानव लक्ष्य के अर्थ में परस्पर सहयोगी होने की जिम्मेदारी का भाव
 - निष्ठा = लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयास में निरंतरता
- ममता = समझदारी के प्रकाश में शरीर के पोषण की जिम्मेदारी का भाव
 - उदारता = उपरोक्त के लिए तन, मन, धन को प्रतिफल अपेक्षा विहिन समर्पित करना
- श्रद्धा = समझदारी / श्रेष्ठता की ओर गति दे पाना
 - पूज्यता = समझदार / श्रेष्ठ बनने के लिए तत्परता
- वातसल्य = दूसरों की समझदारी के प्रति जिम्मेदारी का भाव
 - सहजता = प्रमाणिकता पूर्वक जीना

परिवार में मानव की परस्परता में मूल्य

- कृतज्ञता = मेरे सुख/समृद्धि पूर्वक जीने के अर्थ में मिले सहयोग के प्रति स्वीकृति का भाव
 - सौम्यता = स्वयं स्फूर्त नियंत्रित आचरण
- गौरव = मानवीय परंपरा को प्रमाणित करने के अर्थ में मिले सहयोग के प्रति स्वीकृति का भाव
 - सरलता = विरोध/तनाव रहित अंगीकरण
- प्रेम = पूर्ण मूल्य = विश्वास की पूर्णता । पूर्ण विश्वास = विश्व के प्रति आश्वस्त होना = प्रेम ।
 - अनन्यता = पूर्णता में जीना अर्थात् परायापन का अभाव, सार्वभौम व्यवस्था को पहचान कर तालमेल पूर्वक जीना

परिवार मूल्य

स्थापित मूल्य

1. विश्वास
2. सम्मान
3. स्नेह
4. ममता
5. वातसल्य
6. कृतज्ञता
7. गौरव
8. श्रद्धा
9. प्रेम

शिष्ट मूल्य

- सौजन्यता
- अरहरस्यता
- निष्ठा
- उदारता
- सहजता
- सौम्यता
- सरलता
- पूज्यता
- अनन्यता

जाँचे

- ◆ संयुक्त परिवार सुखी परिवार या
- ◆ छोटा परिवार सुखी परिवार या
- ◆ समझदार परिवार सुखी परिवार
- ◆ प्रेम विवाह सफल विवाह या
- ◆ परम्परागत विवाह सफल विवाह या
- ◆ समझदारी पूर्वक विवाह सफल विवाह
- ◆ हम साथ-जीते है या साथ-साथ रहते है ।

जाँच हेतू चर्चा :

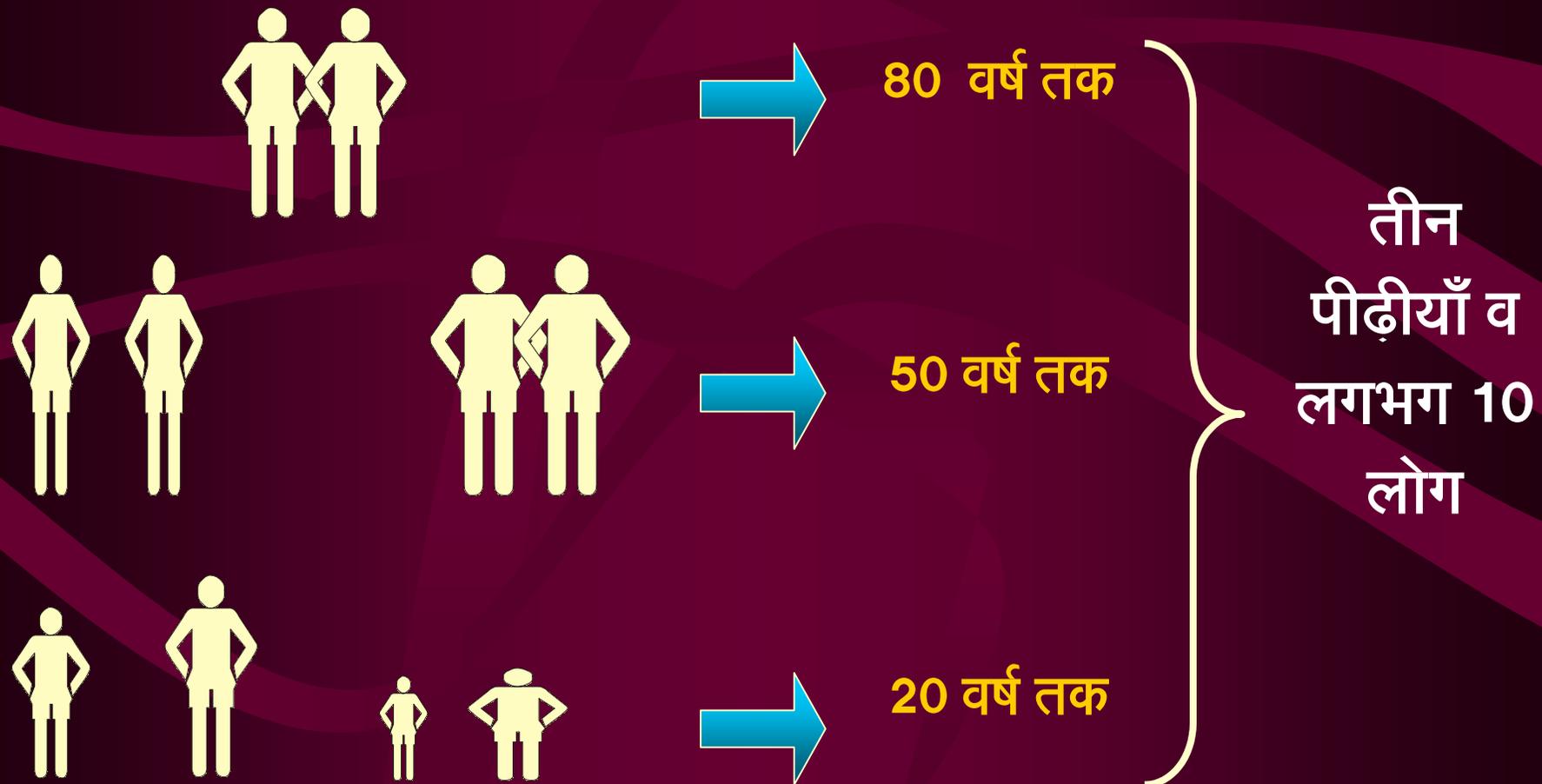
वर्तमान में पारिवारिक संबंधों की स्थिति

प्रश्न: संबोधन के आधार पर संबंध की निरंतरता बनेगी या संबंध के आधार पर संबोधन सार्थक होंगे ?

संबंध	संबोधन
विश्वास, सम्मान, स्नेह	मित्र-भाई
विश्वास, सम्मान, स्नेह, ममता	मां
विश्वास, सम्मान, स्नेह, वातसल्य	पिता/गुरु
विश्वास, सम्मान, स्नेह, प्रेम	पति-पत्नि

परिवार का सही स्वरूप

परिवार में संख्या का आधार = संबंधों को पहचानने और मूल्यों का निर्वाह करने हेतु प्रशिक्षण केन्द्र



परिवार में व्यवस्था: सार

लक्ष्य = मानव लक्ष्य (समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व)
के क्रम में समाधान (= सुख) एवं समृद्धि को प्रमाणित करना
= मैं (जीवन) की चाहत (निरन्तर सुख) को पाने हेतू सबसे
छोटी व्यवस्था ।

परिवार संबंधो में स्थापित व शिष्ट मूल्य

परिवार संख्या/संरचना = तीन पीढ़ीयाँ व लगभग 10 लोग

लक्ष्य के अर्थ में आवश्यकता – सभी प्रौढ़ समझदार, परिवार समृद्ध
तथा सभी बच्चों के समझदार होने
के लिए पूर्ण अनुकूल अवसर

प्रस्तुति क्रम में हम यहाँ हैं

◆ परिचय: यह शिविर क्या, क्यों और कैसे

◆ प्रस्तुति का संदर्भ

◆ मानव के मूल प्रश्न

◆ वर्तमान जीने की समीक्षा

◆ मूल विषय वस्तु

◆ मानव में व्यवस्था

◆ परिवार में व्यवस्था

◆ समाज में व्यवस्था

◆ प्रकृति एवं अस्तित्व में व्यवस्था

◆ समापन

समाज में व्यवस्था

- **समाज क्यों ?** परिवार समूहों के निरन्तर सुख / समृद्धि पूर्वक जीने हेतू व्यवस्था
- **समाज क्या ?** मानव लक्ष्य साकार करने के लिए मानवीय व्यवस्था
= अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था
- **समाज कैसे ?**

मानव में	परिवार में	समाज में	प्रकृति में
समाधान हो	समृद्धि हो	अभय हो	सहअस्तित्व हो
जीवन मूल्य - सुख	शान्ति	संतोष	आनंद

निरन्तर सुख
- **समाज कितना ?** धरती पर उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के अनुपात में ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए धरती पर बेहतर प्राकृतिक स्थितियाँ उपलब्ध हो ।

वर्तमान समाज की समीक्षा

- पशु-पक्षियों व मानव में इकट्टा होने का आधार
- मानव का वर्तमान में इकट्टा होने का आधार
- अभी तक की सामाजिक अवधारणाओं की समीक्षा

मानवीय व्यवस्था (अखण्ड समाज एवं सार्वभौम व्यवस्था) को साकार करने हेतू पाँच योजनाएं

1. शिक्षा – संस्कार योजना

शिक्षा – चार आयाम (स्वयं, परिवार, समाज, प्रकृति एवं अस्तित्व) में व्यवस्था को समझना

शिक्षा = उपलब्ध प्राकृतिक एवं मानव संसाधन का इस प्रकार सदुपयोग कर पाने की क्षमता को विकसित कर पाना ताकि हर परिवार निरन्तर सुख, समृद्धि पूर्वक जी सके तथा आने वाली पीढ़ियों को भी बेहतर प्राकृतिक एवं सामाजिक वातावरण उपलब्ध हो

संस्कार – चार आयाम (स्वयं, परिवार, समाज, प्रकृति एवं अस्तित्व) में व्यवस्था में जीना

मानवीय व्यवस्था (अखण्ड समाज एवं सार्वभौम व्यवस्था) को साकार करने हेतू पाँच योजनाएं

1. शिक्षा – संस्कार योजना

कार्यक्रम

- जीवन विद्या शिविर
- शिक्षा का मानवीयकरण
 - उपलब्ध विद्यालयों में मानवीय मूल्यों का समावेश
 - मानवीय मूल्यों के प्रकाश में शिक्षा हेतू विद्यालय स्थापित करना ।

समझना ही प्रतिभा है । जीना ही संस्कार है ।

अखण्ड समाज एवं सार्वभौम व्यवस्था मानवीय व्यवस्था को साकार करने हेतू पाँच योजनाएं

2. स्वास्थ्य – संयम योजना :-

स्वस्थ शरीर – मैं के प्रमाणित होने के लिए सक्षम शरीर

शरीर का प्रयोजन – 1. सन्तानोत्पत्ति (मैं का साधन)

2. समझना, जीना, समझाना (मैं का साधन)

3. सीखना, करना, सिखाना (मैं का साधन)

संयम – निरन्तर सुख की चाहत के अर्थ में शरीर के महत्व को समझकर, शरीर को स्वस्थ रखने की जिम्मेदारी का भाव ।

अखण्ड समाज एवं सार्वभौम व्यवस्था मानवीय व्यवस्था को साकार करने हेतू पाँच योजनाएं

2. स्वास्थ्य – संयम योजना :-

संयम – निरन्तर सुख की चाहत के अर्थ में शरीर के महत्व को समझकर, शरीर को स्वस्थ रखने की जिम्मेदारी का भाव ।

संयम कैसे – सूत्र :- गुरु मूल्य में लघु मूल्य समाया रहता है ।

सूत्र :- संज्ञानशीलता के प्रकाश में संवेदनाएं नियंत्रित हो जाती है ।

संयम कितना – पांचों योजनाओं में भागीदारी सुनिश्चित रहे , बाधित न हो ।

अखण्ड समाज एवं सार्वभौम व्यवस्था मानवीय व्यवस्था को साकार करने हेतू पाँच योजनाएं

3. उत्पादन- कार्य योजना :-

उत्पादन – भौतिक आवश्यकताओं को पाने के लिए
उपयोगिता/पूरकता विधि से जड़ प्रकृति के
साथ किया गया श्रम

- आवर्तनशीलता के सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए

कार्य – उत्पादित वस्तुओं के संरक्षण (रख-रखाव) हेतू किया
गया श्रम ।

अखण्ड समाज एवं सार्वभौम व्यवस्था मानवीय व्यवस्था को साकार करने हेतू पाँच योजनाएं

4. विनिमय – कोष योजना :-

विनिमय

- लाभ-हानि मुक्त विधि से आवश्यक वस्तुओं का आदान प्रदान
- श्रम मूल्य के आधार पर

कोष

- मानवीय व्यवस्था (आपदा, समाज गति) के अर्थ में संचय ।
संग्रह भयवश असुरक्षा / पहचान की दृष्टि से संग्रह

अखण्ड समाज एवं सार्वभौम व्यवस्था मानवीय व्यवस्था को साकार करने हेतू पाँच योजनाएं

5. न्याय- सुरक्षा योजना :-

न्याय – मानव का मानव के साथ उभय तृप्ति
पूर्वक जीना सुनिश्चित कर पाना

सुरक्षा – उपलब्ध भौतिक संसाधनों के संरक्षण एवं
सदुपयोग की निरंतरता सुनिश्चित कर पाना

दस सोपानीय समाज व्यवस्था

संबंध मूल्य – व्यवहार	परिवार (सभा)	सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी
संबंध मूल्य – व्यवहार	परिवार समूह (सभा)	सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी
संबंध मूल्य – व्यवहार	ग्राम स्वराज्य परिवार (सभा)	सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी
संबंध मूल्य – व्यवहार	ग्राम समूह परिवार (सभा)	सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी
संबंध मूल्य – व्यवहार	ग्राम क्षेत्र परिवार (सभा)	सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी
संबंध मूल्य – व्यवहार	मंडल परिवार (सभा)	सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी
संबंध मूल्य – व्यवहार	मंडल परिवार समूह(सभा)	सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी
संबंध मूल्य – व्यवहार	मुख्य राज्य परिवार (सभा)	सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी
संबंध मूल्य – व्यवहार	प्रधान राज्य परिवार (सभा)	सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी
संबंध मूल्य – व्यवहार	विश्व राज्य परिवार (सभा)	सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी

प्रस्तुति क्रम में हम यहाँ है

◆ परिचय: यह शिविर क्या, क्यों और कैसे

◆ प्रस्तुति का संदर्भ

◆ मानव के मूल प्रश्न

◆ वर्तमान जीने की समीक्षा

◆ मूल विषय वस्तु

◆ मानव में व्यवस्था

◆ परिवार में व्यवस्था

◆ समाज में व्यवस्था

◆ प्रकृति एवं अस्तित्व में व्यवस्था

◆ समापन

प्रकृति में व्यवस्था

प्रकृति(इकाईयाँ)

जड़ प्रकृति

↓
गठनशील परमाणु

↓
अणु

↓
अणु रचना

↓
अणु पिण्ड

↓
रस

↓
प्राणकोशिका

↓
पेड़-पौधे प्राणावस्था

↓
जीव शरीर

↓
मानव शरीर

चैतन्य प्रकृति

गठनपूर्ण परमाणु =
जीवन

(एक अक्षय बल शक्ति
युक्त भार हीन इकाई)

पदार्थावस्था

↓

+

जीवावस्था

↓

+

ज्ञानावस्था

जाँचे

- वर्तमान में इकाईयों का वर्गीकरण (= living, non- living) क्या सही है ?
- living का अर्थ क्या है ?
- 'प्राण' और 'जीवन' में स्पष्टता
- जीवन किस शरीर को चलाता है – कैसे पहचाने ?
- पौधों में जीवन है या नहीं ?
- इकाईयों का सही वर्गीकरण क्या हो ?
- शिक्षा में समझने का तरीका – whole to part / part to whole ?
- क्या cloning संभव है ?

प्रकृति सहज चार अवस्थाएँ

अवस्था	रूप	क्रिया	स्वभाव	धर्म	अनुषंगी
पदार्थावस्था	मिट्टी, धातु मणि, पत्थर	रचना- विरचना	संगठन विघटन	अस्तित्व	परिणामनुषंगी
प्राणावस्था	पेड़-पौधे लता, गुल्म	श्वसन- प्रश्वसन	सारक मारक	अस्तित्व सहित पुष्टि	बीजानुषंगी प्रवृत्ति
जीवावस्था	पशु-पक्षी	वंश केन्द्रित आहार-विहार	क्रूर अक्रूर	अस्तित्व, पुष्टि सहित जीने की आशा	वंशानुषंगी प्रवृत्ति
ज्ञानावस्था	मनुष्य	समझदारी केन्द्रित आहार-विहार कार्य-व्यवहार	धीरता, विरता, उदारता, दया कृपा, करुणा	अस्तित्व, पुष्टि सहित सुख से जीने की आशा	संस्कारानुषंगी (समझदारी के अनुसार प्रवृत्ति)

अस्तित्व (= जो है = Existence) में व्यवस्था

अस्तित्व

प्रकृति (इकाईयाँ)

इकाईयाँ

उर्जा संपन्न, क्रियाशील, नियंत्रित

समस्त क्रिया सलक्ष्य

है, नियमबद्ध है

जीवन की क्रियाएँ पूर्ण समझ के बाद ही
नियंत्रित होती हैं

बिना शरीर के भ्रमित जीवन = 'भूत-प्रेत'

पूर्ण समझ युक्त जीवन = 'देवी-देवता'

खाली स्थान (सत्ता)

असीम, व्यापक

उर्जा, क्रियाशून्य
साम्य एवं निरपेक्ष उर्जा
पारगामी, पारदर्शी

क्रियाशून्य: कर्ता नहीं, नियंता नहीं,
दृष्टा नहीं, भोक्ता नहीं, न्यायकारी नहीं

सार्थक परिभाषा के साथ

ईश्वर, परमात्मा,

अध्यात्म, जैसी संज्ञाएँ दी

जा सकती हैं

कुछ निष्कर्ष

- समस्त इकाईयाँ उर्जा में डूबी है, भीगी है, घिरी है अर्थात उर्जा संपन्न है, क्रियाशील है, नियंत्रित है।
- ईश्वर अनुभव काल में आनंद के रूप में प्राप्त है, विचार काल में समाधान के रूप में प्राप्त है, आचरण काल में न्याय के रूप में प्राप्त है, व्यवसाय काल में नियम के रूप में प्राप्त है।

जाँचे

- उसकी मर्जी के बिना पत्ता भी नहीं हिलता
- यह दुनिया ईश्वर की लीला है ।
- कण-कण में ईश्वर है ।

मानवीय आचरण

मूल्य = भाव = भागीदारी

1. वस्तु मूल्य – 2
2. जीवन मूल्य – 4
3. मानव मूल्य – 6
4. स्थापित मूल्य – 9
5. शिष्ट मूल्य – 9

कुल मूल्य = 30

विचार = नैतिकता

1. अर्थनीति –
अर्थ का उत्पादन
2. राज्यनीति –
अर्थ का संरक्षण
3. धर्मनीति
अर्थ, साधन का
सदुपयोग

कार्य-व्यवहार (चरित्र)

1. स्व-धन
उत्पादन, उपहार,
परितोष
2. स्वनारी/स्वपूरुष
3. दयापूर्ण
कार्य – व्यवहार

अर्थ = तन, मन, धन या मन, तन, धन

समस्त समझ का परिणाम या सही शिक्षा से मानव की अपेक्षा या सही मानव की पहचान (U.H.S.)

1. स्वयं के प्रति विश्वास
2. श्रेष्ठता के प्रति सम्मान के प्रति विश्वास
3. स्वयं की प्रतिभा (समझ) के प्रति विश्वास
4. स्वयं के व्यक्तित्व (जीना) के प्रति विश्वास
5. प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन के प्रति विश्वास
6. व्यवसाय में स्वावलम्बन के प्रति विश्वास
7. व्यवहार में सामाजिकताके प्रति विश्वास

पाँच कोटि के मानव

मानव	स्वभाव	विषय	दृष्टि	प्रमाण
पशु मानव	दीनता प्रधान हीनता, क्रूरता	आहार निद्रा, भय, मैथुन	प्रिय, हित, लाभ	अव्यवस्था का प्रकाशन
राक्षस मानव	क्रूरता प्रधान हीनता, दीनता	आहार निद्रा, भय, मैथुन	प्रिय, हित, लाभ	अव्यवस्था का प्रकाशन
मानव	धीरता, वीरता, उदारता	वित्तेषणा, पुत्तेषणा, लोकेषणा	न्याय	स्वराज्य में प्रवृत्ति शिक्षा, आचरण, व्यवस्था में सामरस्यता
देव मानव	दया प्रधान धीरता, वीरता, उदारता	लोकेषणा	धर्म	स्वराज्य में निष्ठा, स्वतंत्रता में प्रवृत्ति
दिव्य मानव	दया, कृपा, करुणा धीरता, वीरता, उदारता	सर्वतोमुखी समाधान	सत्य	स्वराज्य और स्वतंत्रता में जीना

प्रस्तावित जीवन शैली

चाहना	सर्व मानव लक्ष्य	विधि	फल परिणाम
अच्छा होना निरन्तर सुख	समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व	समझ पूर्णता आचरण पूर्णता	मानव में समाधान = सुख परिवार में समृद्धि = शांति समाज में अभय = संतोष प्रकृति में सहअस्तित्व = आनंद

चाहना एवं फल परिणाम में संगीत,
तारतम्यता

प्रस्तुति क्रम में हम यहाँ है

◆ परिचय: यह शिविर क्या, क्यों और कैसे

◆ प्रस्तुति का संदर्भ

◆ मानव के मूल प्रश्न

◆ वर्तमान जीने की समीक्षा

◆ मूल विषय वस्तु

◆ मानव में व्यवस्था

◆ परिवार में व्यवस्था

◆ समाज में व्यवस्था

◆ प्रकृति एवं अस्तित्व में व्यवस्था

◆ समापन

मध्यस्थ दर्शन के प्रेरणा स्रोत: श्रद्धेय ए. नागराज जी

◆ सन् 1920 में कर्नाटक प्रान्त में जन्मे एक सफल उद्योगपति एवं कवि श्री ए. नागराज के जीवन में दो मौलिक प्रश्न उठे :

- ◆ सही मानव की सार्वभौम पहचान क्या है ?
- ◆ मानव में बंधन और मुक्ति का कारण क्या है ?

◆ वेदान्त में पारंगत होने पर भी अपने प्रश्नों के उत्तर न मिल पाने वश अनुसंधान की प्रवृत्ति हुई । 1 जनवरी 1950 से 1970 तक अमरकंटक में लगातार 20 वर्ष मानव जीवन और प्रकृति की सच्चाईयों को जानने के क्रम में उन्होंने गहन अनुसंधान किया जिसके परिणाम स्वरूप मध्यस्थ दर्शन का उदगम हुआ ।

◆ वर्तमान में श्रद्धेय श्री ए. नागराज जी अमरकंटक (म.प्र.) में परिवार सहित एक स्वावलम्बी जीवन जीते हैं । यह अनुसंधान धरती के हर मानव की जिन्दगी का आईना है, जिसमें देखकर हर मनुष्य विवेक एवं विज्ञान सम्मत विधि से अपनी क्षमता को पहचान कर उसे सही दिशा में नियोजित कर स्थायी सफलता के राजमार्ग पर चल सकता है ।

◆ इस अनुसंधान के प्रकाश में मानवीय शिक्षा एवं सही मनुष्य एवं सार्वभौम व्यवस्था का स्वरूप स्पष्ट होता है जो रहस्य और सम्प्रदायवाद से मुक्त है ।

मध्यस्थ दर्शन की उपलब्ध पुस्तकें: प्रणेता ए. नागराज जी

- यह प्रस्तुति मध्यस्थ दर्शन पर आधारित थी। शिविर केवल परिचय है शिविर में प्रस्तुत मुद्दे हमारे जीने में आ जाए इसके लिये अध्ययन अनिवार्य प्रक्रिया है। अध्ययन हेतू कुछ पुस्तकें एवं Audio, Video CD उपलब्ध है।

प्रस्तावित दर्शन (मध्यस्थ दर्शन)

- मानव व्यवहार दर्शन
- मानव कर्म दर्शन
- मानव अभ्यास दर्शन
- मानव अनुभव दर्शन

विचार के रूप में

- समाधानात्मक भौतिकवाद
- व्यवहारात्मक जनवाद
- अनुभवात्मक अध्यात्मवाद

शास्त्रों के रूप में

- आवर्तनशील अर्थशास्त्र
- व्यवहारवादी समाजशास्त्र
- मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान

योजनाएं

- जीवन विद्या योजना
- मानवीय शिक्षा संस्कार योजना
- परिवार मूलक स्वराज्य योजना

जाँच हेतु कुछ मान्यताएँ

- संबंध बनाने है, या
 - संबंध है ही, केवल पहचानने है।
- जीने के लिए मानना या
 - जानने के लिए मानना
- झेलते हुए करना, करके झेलना व दूसरों को झिलाना या करके समझना या
 - समझकर जीना और प्रमाणित होना
- पाप से घृणा करो पापी से नहीं या
 - पाप एवं गलती समझ में कमी की सूचना है, इसे स्नेह पूर्वक ठीक करना ही इंसानियत है

जाँच हेतु कुछ मान्यताएँ

- कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है **या**
 - निरन्तर सुख, समृद्धि पूर्वक जीने के लिए तन, मन, धन का सदुपयोग करना है (अथवा कुछ पाने के लिए कुछ नियोजित करना पड़ता है)
- हम अमीर बनना चाहते हैं (साधन सम्पन्न दुःखी दरिद्र) **या**
 - हम समृद्ध (साधन सम्पन्न सुखी समृद्ध) होना चाहते हैं
- जिन्दा रहना ही जीना है **या**
 - उत्सव पूर्वक जीना ही जीना है (समझना और प्रमाणित करना ही उत्सव है)
- रोजगार के लिए शिक्षा **या**
 - उत्सव पूर्वक जीने के लिए शिक्षा

जाँच हेतु कुछ मान्यताएँ

- संबंध सफल हैं— संबोधन के आधार पर संबंध से **या**
 - संबंध के आधार पर संबोधन से
- गलती होने से सही समझ में आता है **या**
 - सही समझ में आने से गलती ठीक हो जाती है
- खाने के लिए जीना **या**
 - जीने (समझना व प्रमाणित करना) के लिए खाना
- कार्य, व्यवहार के लिए समर्पित है **या**
 - व्यवहार, कार्य के लिए समर्पित है

जाँच हेतु कुछ मान्यताएँ

- हम साथ-साथ जीते हैं **या**
 - हम साथ-साथ रहते हैं
- हम साधनों के लिए **या**
 - साधन हमारे लिए
- जैसा खाये अन्न वैसा बने मन **या**
 - जैसा रहे मन, वैसा खाये अन्न
- सही सबका अपना-अपना है **या**
 - मानव जाति सही में एक तथा गलती में अनेक है

जाँच हेतु कुछ मान्यताएँ

- जियो और जीने दो **या**
 - जीने दो और जियो
- यह मृत्यु लोक है **या**
 - यह जागृति लोक है
- छोटा परिवार सुखी परिवार **या**
 - संयुक्त परिवार सुखी परिवार **या**
 - समझदार परिवार सुखी परिवार
- प्रेम विवाह, सफल विवाह **या**
 - परम्परागत विवाह सफल विवाह **या**
 - समझदारी पूर्वक विवाह सफल विवाह

जाँच हेतु कुछ मान्यताएँ

- मैं शरीर हूँ या
 - मैं जीवन हूँ शरीर को चलाता हूँ
- मैं शरीर में हूँ या
 - शरीर मुझमें है
- प्रतियोगिता – दूसरों से अधिक या
 - स्वयं में पूर्ण होना, दूसरों के लिए प्रेरणा होना
- मानव की मूलभूत आवश्यकता रोटी, कपड़ा और मकान या
 - मानव की मूलभूत आवश्यकता समझदारी तथा रोटी, कपड़ा, मकान है

जाँच हेतु कुछ मान्यताएँ

- मानव खाली हाथ आता, खाली हाथ जाता है **या**
 - मानव समझ पूरा करने आता है, समझ साथ लेकर जाता है
- अंधकार, दुःख, भ्रम का अस्तित्व है **या**
 - अंधकार, दुःख, भ्रम का अस्तित्व नहीं है
- सुख-दुःख साथ-साथ है **या**
 - केवल सुख और सुख की निरन्तरता है
- संसार दुःख रूप है **या**
 - संसार सुख रूप है
- जीवन एक संघर्ष है **या**
 - जीवन नित्य उत्सव है

जाँच हेतु कुछ मान्यताएँ

- मानव की भौतिक आवश्यकता असीम है साधन सीमित है **या**
 - मानव की भौतिक आवश्यकता सीमित है साधन पर्याप्त है
- धन होने से सब ठीक हो जाएगा **या**
 - सही समझ पूर्वक जीने से सब ठीक हो जाएगा
- संघर्ष से समाधान मिलेगा **या**
 - समाधान से समाधान मिलेगा
- साधन, सुविधाओं में वृद्धि विकास है **या**
 - मानव जाति तृप्ति से जी सके ऐसी व्यवस्था के लिए प्रयास ही विकास है
- विकास भौतिक वस्तुओं से होता है **या**
 - विकास मानव में होता है

जाँच हेतु कुछ मान्यताएँ

- संतुष्ट हो गये तो विकास नहीं होगा **या**
 - संतुष्टि पूर्वक, संतुष्टि की निरन्तरता के लिए किये गये प्रयास है विकास का आधार है (असंतुष्टि = साधनो से निरन्तर सुखी होने का प्रयास)
- असंतुष्ट व्यक्ति विकास का आधार होगा **या**
 - असंतुष्ट व्यक्ति विकास प्रक्रिया में बाधक होगा
- सबका लक्ष्य अलग-अलग है **या**
 - समस्त मानव का लक्ष्य एक ही है – समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व
- धर्म अनेक है **या**
 - समस्त मानव का धर्म एक है – निरंतर सुख
- मानव धर्म परिवर्तन कर सकता है **या**
 - धर्म परिवर्तन एक असंभव घटना है

जाँच हेतु कुछ मान्यताएँ

- मानव के पैदा होने के बाद धर्म और लक्ष्य तय होता है **या**
 - मानव के पैदा होने के पहले से ही धर्म और लक्ष्य तय है
- राष्ट्र की प्रमुख समस्याएं जनसंख्या, भ्रष्टाचार, गरीबी, प्रदूषण, आंतकवाद, बेरोजगारी है **या**
 - किसी भी राष्ट्र की मूल समस्या मानव लक्ष्य न पहचान पाना और लक्ष्य के अनुरूप तन, मन, धन के सदुपयोग हेतू युवाओं को समर्थ नहीं बना पाना है । (उपरोक्त समस्याएं केवल मूल समस्या के लक्षण है)
- देश को राजनीति चाहिए **या**
 - देश को राज्यनीति चाहिए

जाँच हेतु कुछ मान्यताएँ

- शिक्षा का प्रयोजन नौकरी हो **या**
 - शिक्षा का प्रयोजन – उपलब्ध मानव एवं प्राकृतिक संसाधनों का इस प्रकार सदुपयोग करने की क्षमता को युवाओं में विकसित कर पाना ताकि –
 1. हर परिवार निरन्तर सुख/समृद्धि पूर्वक जी सके ।
 2. संसाधन व भयमुक्त सामाजिक वातावरण उपलब्ध हो सके ।
- विभिन्न कर्मकाण्ड, प्रतीक, चिन्ह, वेशभूषा आदि धर्म के लक्षण है **या**
 - तन, मन, धन का सदुपयोग पूर्वक जीना ही धार्मिकता का सार्वभौम स्वरूप है
- सब ईश्वर की लीला है । उसकी मर्जी के बिना पत्ता नहीं हिलता है **या**
 - सम्पूर्ण होना नियम पूर्ण है । इसलिए अस्तित्व में रहस्य नहीं, नियंता नहीं है

जाँच हेतु कुछ मान्यताएँ

- स्वतंत्रता का अर्थ मनमानी है **या**
 - व्यवस्था को समझकर, व्यवस्था में जीना ही स्वतंत्रता है,
 - सभी आयाम में तालमेल पूर्वक जीना ही स्वतंत्रता है,
 - समाधान सम्पन्नता पूर्वक जीना ही स्वतंत्रता है,
 - स्वयं को वातावरण के दबाव से मुक्त कर लेना ही स्वतंत्रता है
- धन ही मुख्य उपलब्धि है **या**
 - निरन्तर सुख/समृद्धि पूर्वक जी पाना ही मुख्य उपलब्धि है
- सुख निरन्तर हो गया तो बोर हो जाएंगे **या**
 - सुख की निरन्तरता ना होना ही बोरियत है

जाँच हेतु कुछ मान्यताएँ

- बल पूर्वक दूसरों को दबाना, हराना वीरता है **या**
 - दूसरों को समझदारी के लिए प्रेरणा और सहयोग दे पाना ही वीरता है
- मानव के पास अनंत प्रश्न है **या**
 - मानव के पास मूल प्रश्न केवल दो ही है –
 1. क्यों जीना है ?
 2. कैसे जीना है ?
- अस्तित्व सहज फैलाव असीम है इसलिए सम्पूर्ण को समझना असंभव है **या**
 - फैलाव असीम है लेकिन वास्तविकताएं केवल तीन है –
 1. गठनशील परमाणु
 2. गठनपूर्ण परमाणु
 3. खाली स्थान(अतः सम्पूर्ण को समझ सकते हैं)

धन्यवाद